

॥ ॐ ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ ॐ ॥

श्री शुभकृत् नाम संवत्सर

शालीवाहन शक - 1944

# दीपावली पूजाविधान 2022

श्री ऋषिकृत् नाम संवत्सर

शालीवाहन शक - 1944

दीपावली साधनలు 2022



श्री निखिल चेतना केन्द्र, पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

श्री निखिल चेतना केन्द्र, पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

॥ ॐ ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ ॐ ॥

## दीपावली साधनाएँ 2022

प्रिय साधक बन्धू / भगिनियों.....

श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद की ओर से दीपावली की विशेष साधनाएँ दी जा रही है।

दीपावली की शुभकामनाएँ एवं धन, ऐश्वर्य, समृद्धि की प्राप्ति के लिये साधनात्मक आशिर्वाद ।

परम पूजनीय सद्गुरुदेव स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्दजी की असीम कृपा तले साधनाओं की परंपरा को लेकर आगे बढ रहे हम सब साधक इस बार दीपावली में लक्ष्मी प्राप्ति संबंधित तंत्र साधनाएँ सम्पन्न करेंगे।

होली की रात्री, शिवरात्री, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं दीपावली की रात्रियों को तांत्रोक्त सिद्धी रात्री कहा गया है।

मै इस बार धनत्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया तक की पांच दिनों की साधनाएँ दे रहा हूँ ।

आप सब साधक साधना सम्पन्न करें एवं अनुभव करें की आप सफलता की ओर अग्रसर है, तो मुझे मेरे इस प्रयास का सफल अनुभव होगा, प्रसन्नता होगी।

आपका अपना गुरु भाई



डॉ. अनिल कुमार जोशी

## शास्त्रोक्त महालक्ष्मी पूजन

अश्विन कृष्ण अमावास्या को प्रातःकाल अपने गृह व पूजन-कक्ष को अच्छी तरह से साफ करने के बाद स्नान करना चाहिये। स्नान करने के बाद जिनके पिता न हो, उन्हें पितरों का पूजन-तर्पण करना चाहिये।

इसके बाद गत वर्ष में स्थापित भगवती लक्ष्मी को जगाकर, उनका षोडशोपचार या पञ्चोपचार से पूजन करना चाहिये। साथ ही अन्य देवताओं का भी पूजन करना चाहिये। पूजन करने के बाद भगवती व देवताओं से अपनी त्रुटियों हेतु 'क्षमा-प्रार्थना' करनी चाहिये।

अश्विन कृष्ण अमावास्या की रात्रि में भगवान् गणेश, भगवती लक्ष्मी की नवीन चित्र की पूजा की जाती है। रेशमी वस्त्र पर अनार या बेल की लेखनी द्वारा लाल चन्दन से 'अष्ट-दल-कमल' पुष्प बनाकर नवीन चित्र को सुन्दर वस्त्र पहना कर स्थापित किया जाता है।

कहते है कि राजा बलि के कारागार में लक्ष्मी सब देवताओं के साथ बन्धन में थी। आज के दिन ही अश्विन कृष्ण अमावास्या को विष्णु ने उन सबको बन्धन से छुड़ाया था। बन्धन-मुक्त होते ही सभी देवता भगवती लक्ष्मी के साथ क्षीर-सागर में जाकर सो गये थे।

अतः अश्विन कृष्ण अमावास्या को भगवान् गणेश व भगवती लक्ष्मी की सुन्दर नई चित्र का पूजन किया जाता है। उनके शयन का सुन्दर प्रबन्ध किया जाता है, जिससे वे क्षीर-सागर न जाकर अपने घर में ही प्रतिष्ठित रहे।

जो लोग भगवती लक्ष्मी का इस प्रकार स्वागत करते है, उन्हें छोडकर वे कभी कही नहीं जाती। इसके विपरीत जो आलस्य-वश या निद्रा-वश, भगवती लक्ष्मी का पूजन नहीं करते, वे सदैव दरिद्रता से पीडित रहते है।  
**आत्म-शोधन :-** स्नान आदि करके कर्ता शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे। तब पंच-पात्र द्वारा दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न लिखित मंत्र पढते हुये जल अपने ऊपर छिडके ।

॥ ॐ अपवित्र पवित्रोऽवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इसके बाद पंच पात्र से पुनः जल लेकर तीन बार आचमन करे।

1. ॐ आत्म-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा। 2. ॐ विद्या-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

3. ॐ शिव-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

**संकल्पः-** तीन बार आचमन करने के बाद पंच-पात्र से पुनः जल लेकर दाहिने हाथ की झूठी हथेली को स्वच्छ करे। ऐसे स्वच्छ दाहिने हाथ की हथेली में पुनः बाँये हाथ द्वारा अचमनी से जल, अक्षत, पुष्पादि लेकर पूजा का संकल्प पढे।

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्धे श्वेत वराह कल्पे, जम्बू द्वीपे, भरत-खण्डे, अमुक-प्रदेशे, अमुक-पुण्य क्षेत्रे, कलियुगे, कलि-प्रथम चरणे, शुभकृत नाम संवत्सरे, अश्विन मासे, कृष्ण पक्षे, अमावास्या-तिथौ, सोम-वासरे, (अमुक)-गोत्रोत्पन्नोऽहं, (अमुक)-नाम-शर्माऽहं सपत्नीकस्य, सपुत्रस्य, सबान्धवस्य सर्वत्र यशो-विजयादि लाभार्थं सर्वारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं सकल मनोकामना सिद्धार्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्यर्थं, प्राप्त लक्ष्मी चिर काल संरक्षणार्थं, प्रचलित व्यापार प्रतिष्ठाने बहु धन लाभार्थं श्री महा लक्ष्मी प्रसन्नार्थं (यदि नये बही खाते का पूजन करना हो, तो अमुक नामकस्य मम व्यापार प्रतिष्ठानस्य नूतन वासना पूजन कर्मणः साङ्गता सिद्धार्थं (इतना और जोड लेना चाहिये) स्वस्ति वाचन कलश स्थान पूर्वक यथा सम्पादित सामग्रया गणपति सूर्यादि नवग्रह षोडश मातृकादि पूजन सहितं दीपावल्या श्री गणेश लक्ष्मी चित्र पूजनम् करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प पढकर दाहिने हाथ मे लिया हुआ जल अपने सम्मुख छोड दे।

**शान्ति पाठ :- (स्वस्ति वाचन)**

ॐ आ नो भद्राः कतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।

देवा नो यथा सदामिद्वृधे असन्नप्रयुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥1॥

ॐ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गुं रातिरभि नो निवर्तताम् ।

देवानां गुं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥2॥

ॐ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदीतिन्दक्षम स्त्रिधम्।

अर्यमणं वरुणं गं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत् ॥3॥

ॐ तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथ्वी तत्पिता द्यौः।

तद् ग्रावाणः सोम-सुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्यायुवम् ॥4॥

ॐ तमीशानं जगतः तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।

पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥5॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व-वेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥6॥

ॐ पृषदश्व मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।

अग्नि जिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वे नो देवाऽवसा गमन्निह॥7॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुव गुं सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥8॥

ॐ शतमिन्नु शरदोऽन्ति देवा यत्रा नश्चक्राजरसं तनूनां।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो॥9॥

ॐ अदिति द्यौरदितिरन्तरिक्ष मदितिः। माता स पिता स पुत्रः।

विश्वेदेवा अदितिः। पञ्च जनाः अदितिर्जात मदितिर्जनिवम् ॥10॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः।

शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं गुं शान्तिः।

शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥11॥

**लक्ष्मी-कुबेर पुजन मुहूर्त :-**

दि. 24-10-2022, सोमवार

दो पहर 3:00 बजे से 6:00 बजे तक।

शाम 6:00 बजे से 8:30 बजे तक।

रात्री 10:30 बजे से 12:30 बजे तक।

शान्ति पाठ से शरीर सब प्रकार से शुद्ध हो जाता है तथा अकल्याण और अशुभ दूर हो जाता है।

**मङ्गल पाठ :-** हाथ मे अक्षत या पुष्प लेकर अपने मङ्गल की कामना से  
 स्तुति करो।  
 सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।  
 लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥1॥  
 धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।  
 द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥2॥  
 विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।  
 संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥3॥  
 शुक्लाम्बर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।  
 प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये॥4॥  
 सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सवार्थ साधिके।  
 शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि! नमोऽस्तुते॥5॥  
 सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।  
 येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः॥6॥  
 तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, तारा बलं चन्द्र बलं तदेव।  
 विद्या बलं दैव बलं तदेव, लक्ष्मीपतेरंग्रि युगं स्मरामि॥7॥  
 लाभस्तेषां जयस्तेषां कृतस्तेषां पराजयः।  
 येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥8॥  
 विनायकं गुरु भानु ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान् ।  
 सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये॥9॥  
 अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थ पूजितो यः सुरासुरैः।  
 सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः॥10॥  
 सर्वेष्वारब्ध कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः।  
 देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दना॥11॥

**कलश स्थापना :-** मङ्गल पाठ कर चुकने पर कलश स्थापन हेतु पूजा करो।

कलश की जगह की पृथ्वी को हाथ से स्पर्श कर यह मंत्र पढे।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्व धाया विश्वस्य भुवनस्य धर्ती।  
 पृथिवीं यच्छ पृथ्वीं दृं गुं ह पृथिवीं मा हि गुं सीः॥  
**कलश की जगह पर मिट्टी और यव छोडे और यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।  
 दीर्घाम्नु प्रसितिमायुषे द्वां देवो वः सविता हिरण्य पाणिः।  
 प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥  
**कलश को धीरे से उठाकर उसी जगह रखे दे और यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ आ जिघ्र कलशं मद्वा त्वा विशन्त्विन्दवः।पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः  
 सहस्रं धुक्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः॥  
**कलश मे जल छोडे और यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत्त सदन्यसि  
 वरुणस्य ऋत्त सदनमसि वरुणस्य ऋत्त सदनमासीद॥  
**कलश के गले मे लाल वस्त्र या मौली लपेटे तथा यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ वसोः पवित्रमसि शत-धारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम् ।  
 देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत-धारेण सुच्वा काम-धुक्षः॥  
**कलश मे सुपारी छोडे और यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।  
 बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचत्वंगं हसः॥  
**कलश मे एक रुपये का सिक्का चढावे और यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ हिरण्य गर्भः सम वर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।  
 स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां तस्मै देवाय हविषा विधेम॥  
**गन्ध, रोली आदि चढावे और यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीं।  
 ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥  
**सर्वौषधि छोडकर यह मंत्र पढे:-**  
 ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा।  
 मनैनु बभ्रूणा मह शतं धामानि सप्त च॥

सप्त मृत्तिका छोडकर यह मंत्र पढे:-  
 ॐ स्योना पृथिवि! नो भवान्नृक्षरा निवेशिनी।  
 यच्छा नः शर्म स-प्रथाः॥

दुर्वा चढाकर यह मंत्र पढे :-  
 ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषस्परि।  
 एवानो दुर्वे! प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

आम, वड, गूलर या पीपल के पत्ते डालकर यह मंत्र पढे :-  
 ॐ अश्वत्थे वो निषदनम्पणे वो वसतिष्कृत।  
 गोभाज इत्किलासथ यत्न नवथ पुरुषम् ॥

कुशा छोडकर यह मंत्र पढे:-  
 ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽ,  
 उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥  
 तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य,  
 यत् कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

यव या चावलों से भरा पात्र कलश पर रखकर यह मंत्र पढे:-  
 ॐ पूर्णादर्वि परापत सु-पूर्णा पुनरापत।  
 वस्नेव विक्रीणा वहा इष मूर्जं गं शत-क्रतो॥

यह मंत्र पढे और अक्षत छोडकर वरुण स्थापन करे :-  
 ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं,  
 तनो त्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु।  
 विश्वे देवा स इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठत॥

फिर इस मंत्र से आवाहन आदि करे :-  
 ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण ! इहागच्छ,  
 इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण॥

तदनन्तर निम्न मंत्रों से श्री वरुण देव का पाद्यादि उपचारों से क्रमशः पूजन करे:-  
 ॐ वरुणाय नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ वरुणाय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः पुष्पं समर्पयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः धूपं आघ्रापयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः दीपं दर्शयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।  
 ॐ वरुणाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

इस के बाद निम्न मंत्रों से प्रार्थना करे:-  
 ॐ सरितः सागराः शैलस्तीर्थानि जलदा नदाः।  
 आयान्तु मम भक्तस्य दुरित क्षय कारकाः॥1॥  
 क्लशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।  
 मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणाः स्मृताः॥2॥  
 कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्त-द्वीपा वसुन्धरा।  
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः साम वेदोऽथर्वणः॥3॥  
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे क्लशं तु समाश्रिताः।  
 देव दानव सन्वादे मध्यमाने महोदधौ॥4॥  
 उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयं।  
 त्वत्तः सर्वाणि तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः॥5॥  
 त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।  
 शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः॥6॥  
 आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स-पैतृकाः।  
 त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः॥7॥  
 त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव ।  
 सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥8॥

## भगवान् गणपति की पूजा

सर्व प्रथम भगवान् गणपति का पूजन करने के लिए एक सुडौल सुन्दर सुपारी को जल से स्वच्छ कर मौली (रक्त-पीत सुत) से लपेट कर कलश के सम्मुख चित्र पर स्थापित करें। तब उसमें पहले भगवान् गणपति के आविर्भाव को भावना निम्न मंत्र से गन्धाक्षत छोड़कर करें।

ॐ गणानां त्वा गणपतिं गुं हवामहे, प्रियाणा त्वा प्रियपति गुं हवामहे।  
निधीनां त्वा निधि पति गुं हवामहे, वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि।  
गर्भधम्।

इस मंत्र से अक्षत छोड़कर समझे कि श्री गणपति जी का वहाँ आविर्भाव हो गया है। तब निम्न मंत्र से भक्ति पूर्वक उनका आवाहन आदि करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपते! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।।

अब निम्न मंत्र से सुपारी को लेलिहानी मुद्रा दिखाते हुए प्राण प्रतिष्ठा करें:-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्व बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा स इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठ।

इसके बाद सुपारी पर जल आदि चढाते हुए निम्न मंत्रों से भगवान् गणपति का

पाद्यादि उपचारों से पूजन करें:-

- ॐ गणपतये नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः पुष्पं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः धूपं आघ्रापयामि।
- ॐ गणपतये नमः दीपं दर्शयामि।
- ॐ गणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
- ॐ गणपतये नमः दक्षिणां समर्पयामि।

अंत में हाथ जोड़कर भगवान् गणपति से प्रार्थना करें-अनेन पूजनेन श्री गणपतिः प्रीयताम्।।

## नव-ग्रह पूजन

नौ ग्रहों के संक्षिप्त पूजन के लिए कलश के सम्मुख एक पात्र या मिट्टी का प्याला रख लें। फिर बाँएँ हाथ में गन्धाक्षत लेकर भावना से सामूहिक रूप में उन सबका निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आवाहन करें।

ॐ सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-शर-राहु-केतु नव ग्रहेभ्यो नमः।

ॐ नव ग्रहाः! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।

यह मंत्र पढ़कर उक्त पात्र में गन्धाक्षत छोड़ें। फिर निम्न मंत्रों से प्रत्येक मंत्र के आदि में ॐ लगाकर क्रमशः सूर्यादि नौ ग्रहों का पाद्यादि उपचारों से पूजन करें।

- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
- ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि।

फिर हाथ जोड़कर सभी ग्रहों की प्रार्थना करें:-

ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानु-शशी-भूमि-सुतोबुधश्च।  
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति-करा भवन्तु।।

## षोडश मातृका पूजन

षोडश मातृकाओं के संक्षिप्त पूजन के लिए नव ग्रहों के पात्र के पास ही उसी प्रकार का दूसरा पात्र रखें। फिर दाएँ हाथ में गन्धाक्षत लेकर पूर्ववत् सामूहिक रूप में निम्न मंत्र से उनका आवाहन करें।

ॐ गौरी-पद्मा-शची-मेधा-सावित्री-विजया-जया-देवसेना-स्वधा-स्वाहा-माता-

लोक-माता-हृष्टि-पुष्टि-तुष्टि-कुल देवता-षोडश मातृकाभ्यो नमः। ॐ षोडश  
मातृकाः इहा गच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजा गृहाण।  
यह मंत्र पढ़कर निर्दिष्ट पात्र में गन्धाक्षत छोड़ें। फिर क्रमशः निम्न मंत्रों  
से सोलह मातृकाओं का पाद्यादि उपचारों से पूजन करें। प्रत्येकमंत्र के आदि  
में पूर्व वत् ॐ जोड़ लें।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि।  
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि।  
फिर हाथ जोड़कर सोलह मातृकाओं की प्रार्थना करें।  
ते सम्मता जन पदेषु धनानि तेषां, तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः।  
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्य दारा, येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥

### गणेश की नवीन मूर्ति की पूजा

**ध्यान :-** श्रीगणेश-देवता का ध्यान पहले से अपने सम्मुख प्रतिष्ठित श्री  
गणेश की नवीन प्रतिमा में करें।  
उद्यद्-दिनेश्वर-रूचिं निज-हस्त-पद्मैः,  
पाशांकुशाभय-वरान् दधंत गजास्यम् ।  
रक्ताम्बरं सकल-दुःख-हरं गणेशम्,  
ध्याये प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥

**आवाहन :-** श्री गणेश-देवता का ध्यान करने के बाद, निम्न मन्त्र पढ़ते हुये  
श्रीगणेश-प्रतिमा के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखा कर, उनका आवाहन करें।  
आगच्छ देव-देवेश! तेजोराशे गण-पते ।  
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुर-सत्तम ।  
॥ श्रीमद्-गणपति-देवं आवाहयामि ॥  
**पुष्पाञ्जलि :-** आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़ कर उन्हें आसन के  
लिये पाँच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने छोड़ें।  
नाना-रत्न-समायुक्तं कार्त-स्वर-विभूषितम् ।  
आसनं देव-देवेश! प्रीत्यर्थं प्रति-गृह्यताम् ॥  
**स्वागत :-** पुष्पांजलि-रूप आसन प्रदान करने के बाद हाथ जोड़ कर  
'श्रीगणेश-देव । स्वागतम्' अर्थात् 'हे भगवान् गणेश । आपका स्वागत है'  
- यह वाक्य कहें।  
**पाद्य :-** स्वागत कर निम्न-लिखित मन्त्र से पाद्य (पैर धोने हेतु जल) समर्पित  
करें -  
पाद्यं गृहाण देवेश, सर्व - क्षेम - समर्थ, भोः ।  
भक्त्या समर्पितं देव, गण-पते! नमोऽस्तु ते ॥  
**अर्घ्य :-** नमस्ते देव-देवेश! नमस्ते धरणी-धर ।  
नमस्ते जगदाधार, गणेश! अर्घ्यं गृहाण ।  
गन्ध-पुष्पाक्षतैर्युक्तं फल-द्रव्य-समन्वितम् ।  
गृहाण तोयमर्घ्यर्थं परमेश्वर, वत्सल ।  
॥ श्री गणेश-देवाय अर्घ्यं समर्पयामि ॥  
**गन्ध (चन्दन) समर्पण :-**  
श्रीःखण्ड-चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।  
विलेपनं गणपते । चन्दनं प्रति-गृह्यताम् ॥  
॥ श्री गणेश देवाय चन्दनं समर्पयामि ॥  
**पुष्प-समर्पण :-**  
यथा-प्राप्त-ऋ तु-पुष्पैः विल्व-तुलसी-दलेश्च ।  
पुजयामि गणपते! प्रसीद मे सुरेश्वर ।  
॥ श्री गणेश-देवाय पुष्पं समर्पयामि ॥



### धूप-समर्पण :-

वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढ्य सुमनोहरः ।  
 आग्नेयः सर्व-देवानां धुपाऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥  
 ॥ श्रीगणेश-देवाय धूपं आघ्रापयामि ॥

### दीप-समर्पण :-

साज्यं वर्ति-संयुक्तं च वह्निना योजितं मया,  
 दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्य-तिमिरापहम् ।  
 भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।  
 त्राहि मां निरयाद् घोरादीपो-यं प्रति-गृह्यताम् ।  
 ॥ श्रीगणेश-देवाय दीपं दर्शयामि ॥

### नैवेद्य-समर्पण :-

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च ।  
 आहारो भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम् ॥  
 ॥ यथांशतः श्रीगणेश-देवाय नैवेद्यं समर्पयामि- ॐ प्राणाय स्वाहा ।  
 ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।  
 ॐ समानाय स्वाहा ॥

### आचमन (जल) समर्पण :-

ततः पानीयं समर्पयामि इति उत्तरापोशनम् ।  
 हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि । मुख - प्रक्षालनं ।  
 ॥करोद्धर्तनार्थं चन्दनं समर्पयामि॥

### ताम्बूल-समर्पण :-

पूगी-फलं महा-दिव्यं नाग-वल्ली-दलैर्युतम् ।  
 कपूरैला-समायुक्तं ताम्बूलं प्रति-गृह्यताम् ॥  
 ॥ श्रीगणेश-देवाय मुख-वासार्थं पूगी-फलं - युक्तं ताम्बूलं समर्पयामि ॥

### दक्षिणा :-

हिरण्य-गर्भ-गर्भस्यं हेम-वीजं विभावसोः ।  
 अनन्त-पुण्य-फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥  
 ॥ श्रीगणेश-देवाय सुवर्ण-पुष्प-दक्षिणां समर्पयामि ॥



### प्रदक्षिणा :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर - कृतानि च ।  
 तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ॥  
 अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं प्रभो ।  
 तस्मात् कारुण्य-भावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥  
 ॥ श्रीगणेश-देवाय प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

### वन्दना-सहित पुष्पाञ्जलि :-

कर-कृतं वा कायजं कर्मजं वा,  
 श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।  
 विदितमविदितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,  
 जय जय करुणाब्धे, श्री गणपते! त्राहि ।  
 ॥ श्रीगणेश-देवाय मन्त्र-पुष्पं समर्पयामि ॥

### साष्टाङ्ग-प्रणाम :- निम्न मन्त्र पढकर साष्टाङ्ग प्रणाम कर नमस्कार करें -

नमः सर्व-हितार्थाय जगदाधार - हेतवे ।  
 साष्टाङ्गोऽयं सुप्रणामः प्रयत्नेन मया कृतः ॥  
 नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र-मूर्तये सहस्र-पादाक्षि-शिरोरु-बाहवे ।  
 सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटि युगधारिणे नमः ॥

### क्षमा-प्रार्थना :-

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।  
 पूजा-कर्म न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥  
 मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं भक्ति-हीनं सुरेश्वर ।  
 मया यत्-पूजितं देव! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥  
 अपराध - सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।  
 दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ।  
 विधेहि देव! कल्याणं विधेहि विपुला श्रियम् ।  
 रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, द्विषो जहि ॥





यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु ।  
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥  
 अनेन यथा-मिलितोपचार-द्रव्यैः कृत - पूजनेन श्रीगणेश-देवः प्रीयताम् ।  
 ॥ श्री गणेश-देवार्पणमस्तु ॥

इस प्रकार भगवान् गणेश का षोडशोपचार पूजन करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्य - रक्षक ।  
 भक्तानामभयं कर्ता! त्राता भव भवार्णवात् ।

॥ अनेन पूजनेन श्रीगणेशः ऋद्धि-सिद्धि-सहितः प्रीयताम्, नमो नमः॥

### गुरु पूजन

ध्यानः-

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं ।  
 धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम् ॥  
 श्रुतिशिरसिविभातं बोधमार्तण्डमूर्तिम् ।  
 शमिततिमिरशोक श्रीगुरुं भावयामि ॥  
 हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं ।  
 सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम् ॥  
 ध्यायेद्गुरु चन्द्रशिलाप्रकाशं ।  
 चित्पुस्तकाभिष्टवरं दधानम् ॥

श्री गुरुपादुकाभ्यो नमः। ध्यानं समर्पयामि। ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरुवे नमः। ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्श हेतवे श्री परमगुरुवे नमः। ॐ स्वात्माराम पन्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरुवे नमः। आवाहयामि, पूजयामि।

फिर गुरु को पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि समर्पित कर दोनो हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।  
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥  
 अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानान्जनशलाकया ।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥  
 गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णो गुरुर्देवो महेश्वरः।  
 गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

### भगवती लक्ष्मी की नवीन चित्र चाँदी का सिक्का की पूजा

गुरु पूजन के बाद साधक महालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करे। सर्व प्रथम महालक्ष्मी का हाथ जोड़कर ध्यान करे। ध्यान से पूर्व अगरबत्ती, तेल और घी का दीपक प्रज्वलित कर दे और शुद्ध मन से पूर्ण निष्ठा के साथ भगवती महालक्ष्मी का आह्वान करे।

**ध्यान :-** भगवती लक्ष्मी का ध्यान पहले से अपने सम्मुख प्रतिष्ठित श्रीलक्ष्मी की नवीन चाँदी का सिक्का या चित्र मे करें । यथा -

या सा पद्मासनस्था विपु-कटि-तटी पद्म-पत्रायताक्षी,  
 गम्भीरार्तव-नाभिः स्तन-भर-नमिता शभ्र-वस्त्रोत्तरीया ।  
 या लक्ष्मीर्दिव्य-रूपैर्मणि-गण-खचितैः स्वापिता हेम-कुम्भैः,  
 सा नित्यं पद्म-हस्ता मम वसतु गृहे सर्व-मांगल्य-युक्ता ॥

**आवाहन :-** श्री भगवती लक्ष्मी का ध्यान करने के बाद, निम्न मन्त्र पढ़ते हुये श्रीलक्ष्मी की चाँदी का सिक्का या चित्र के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखाकर, उनका आवाहन करे। यथा -

आगच्छ देव - देवेशि । तेजोमयि महा-लक्ष्मि ।  
 क्रियमाणां मया पूजां, गृहाण सुर - वन्दिते ।  
 ॥श्रीलक्ष्मी-देवी, आवाहयामि ॥

**पुष्पाञ्जलि :-** आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़ कर उन्हें आसन के लिये पाँच पुष्प अञ्जली में लेकर अपने सामने छोड़े -

नाना-रत्न-समायुक्तं, कार्त-स्वर-विभुषितम् ।  
 आसनं देव-देवेशि! प्रीत्यर्थं प्रति-गृह्यताम् ॥  
 ॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै आसनार्थं पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ॥



**पुष्पाञ्जलि-पूर्वक पूजन :-** आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़कर श्रीकुबेर  
 देव के आसन के लिए पाँच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने, तिजोरी-  
 बक्से आदि के निकट छोड़े -  
 नाना - रत्न - समायुक्तं, कार्त - स्वर - विभूषितम् ।  
 आसनं देव - देवेश! प्रीत्यर्थं प्रति - गृह्यताम् ॥  
 ॥ श्रीकुबेर-देवाय आसनार्थं पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ॥  
 इस प्रकार पूजन करने के बाद बाँएँ हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर  
 दाहिने हाथ द्वारा निम्न मन्त्र पढ़ते हुए 'तिजोरी-बक्से' आदि पर छोड़े ।  
 ॐ श्री कुबेराय नमः । अनेन पूजनेन श्रीधनाध्यक्ष-  
 श्रीकुबेरः प्रीयताम् । नमो नमः ।  
**जल आरती :-** ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः  
 शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्माशान्तिः  
 सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ।  
**प्रदक्षिणा :-**  
 यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च ।  
 तानि तानि विनश्यन्ति, प्रदक्षिणं पदे पदे ॥  
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं देवि ।  
 तस्मात् कारुण्य-भावेन, क्षमस्व परमेश्वरि ॥  
 ॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै प्रदक्षिणं समर्पयामि ॥  
**वन्दना-सहित पुष्पाञ्जली :-**  
 कर चरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा,  
 श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।  
 विदितमविदितं वा, सर्वमेतत् क्षमस्व,  
 जय जय करुणाब्धे, श्रीमहा-लक्ष्मि त्राहि ।  
 ॥ श्री-लक्ष्मी देव्यै मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पयामि ॥

**साष्टाङ्ग-प्रणाम :-** निम्न मंत्र पढ़कर साष्टाङ्ग प्रणाम कर नमस्कार करें ।  
 ॐ भवानि! त्वं महा-लक्ष्मीः सर्व-काम-प्रदायिनी ।  
 प्रसन्ना सन्तुष्टा भव देवि! नमोऽस्तु ते ।  
 ॥ अनेन पूजनेन श्रीलक्ष्मी-देवी प्रीयताम्, नमो नमः ॥  
 (अर्थात् - हे भवानि! आप सभी कामनाओं को देनेवाली महा-लक्ष्मी हैं ।  
 हे देवी! आप प्रसन्न और सन्तुष्ट हों । आपको नमस्कार ।  
 ॥ इस पूजन से श्रीलक्ष्मी देवी प्रसन्न हों, उन्हें बारम्बार नमस्कार ॥)  
**क्षमा-प्रार्थना :-**  
 आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।  
 पूजा-कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ॥  
 मन्त्र-हीनं क्रिया हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि ।  
 मया यत्-पूजितं देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥  
 अनेन यथा-मिलितोपचार-द्रव्यै कृत-पूजनेन श्रीलक्ष्मी-देवी प्रीयताम्  
 ॥ श्रीलक्ष्मी-देव्यै अर्पणमस्तु ॥

### ‘लेखनी - दावात’ पर - महा-काली पूजन

भगवती लक्ष्मी की नवीन चित्र या चाँदी की सिक्का की पूजा करने के  
 बाद दावात और कलम को पूजा-स्थान पर रखे । दाएँ हाथ की अनामिका  
 से रोचना, लाल-चन्दन या रोली द्वारा उन पर 'स्वस्तिक' का चिह्न बनाए।  
 वहीं भगवती श्रीकाली का पूजन करे । यथा-  
**ध्यान :-** सबसे पहले भगवती श्रीकाली का ध्यान करे, यथा -  
 सद्यश्छिन्न - शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रती ।  
 घोरास्यां शिरसां स्त्रजं सुरचिरामुन्मुक्त-केशावलीम् ॥  
 सृक्कासृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालंकृति ।  
 श्यामाङ्गी कृत-मेखला शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम् ॥  
**आवाहन :-**  
 भगवती काली का ध्यान करने के बाद, लेखनी-दावात के सम्मुख  
 आवाहन-मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उनका आवाहन करे-

ॐ देवेशि! भक्ति-सुलभे । परिवार - समन्विते ।  
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ॥  
दुष्पारे घोर - संसार - सागरे पतितं सदा ।  
त्रायस्व वरदे, देवि! नमस्ते चित् - परात्मिके ॥  
ये देवा, याश्व, देव्यश्व, चलितायां चलन्ति हि ।  
आवाहयामि तान् सर्वान् कालिके, परमेश्वरि ॥  
प्राणान् रक्ष, यशो रक्ष, रक्ष दारान्, सुतान्, धनम् ।  
सर्व-रक्षा-करी यस्मात् त्वं हि देवि, जगन्मये ॥  
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम् ।  
सर्वानन्द - करे, देवि! सर्व - सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥  
तिष्ठात्र कालिके, मातः! सर्व - कल्याण - हेतवे ।  
पूजां गृहाण सुमपखि! नमस्ते शंकर प्रिये॥  
॥श्री महाकाली देवीं आवाहयामि॥

### पुष्पाञ्जलि - पूर्वक पूजन :-

आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़कर उनके आसन के लिए पाँच  
पुष्प अञ्जली में लेकर अपने सामने छोड़े —  
नाना - रत्न - समायुक्तं, कार्त - स्वर - विभूषितम् ।  
आसनं देव - देवेशि! प्रीत्यर्थे प्रति - गृह्यताम् ॥  
॥ श्रीमहा-काली-देव्यै आसनार्थं पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इस प्रकार पूजन करने के बाद बाँएँ हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर  
दाहिने हाथ द्वारा निम्न मन्त्र पढ़ते हुए 'लेखनी-दावात' पर छोड़े —

ॐ महा-काल्यै नमः । अनेन पूजनेन श्रीकाली देवी प्रीयताम् नमो नमः।

### बही - खाते पर 'सरस्वती - पूजन'

दावात और कलम के ऊपर भगवती श्रीकाली का पूजन करने के बाद,  
पहले से गन्धाक्षत द्वारा स्वस्तिका - रचित बही - खाते के ऊपर भगवती  
सरस्वती का पूजन करे । यथा -

ध्यान :-

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला, या शुभ्र - वस्त्रावृता  
या वीणा-वर-मण्डित-करा, या श्वेत - पद्मासना ।  
या ब्रह्माऽच्युत - शङ्कर - प्रभृतिर्देवैः सदा वन्दिता,  
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ॥

### आवाहन :-

भगवती सरस्वती का ध्यान करने के बाद, बही-खाते के सम्मुख आवाहन-  
मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उनका आवाहन करे -  
आगच्छ देव - देवेशि! तेजोमयि सरस्वति ।  
क्रियमाणां मया पूजां, गृहाण सुर-वन्दिते ।  
॥ श्री सरस्वती-देवीं आवाहयामि ॥

### पुष्पाञ्जली - पूर्वक पूजन :-

आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़कर उनके आसन के लिए पाँच  
पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने रखे बही-खाते के निकट छोड़े।  
नाना - रत्न - समायुक्तं, कार्त-स्वर - विभूषितम् ।  
आसनं देव - देवेशि! प्रीत्यर्थं प्रति - गृह्यताम् ॥  
॥ श्रीसरस्वती-देव्यै आसनार्थं पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ॥  
ॐ श्री सरस्वत्यै नमः । अनेन पूजनेन श्रीसरस्वती देवी  
प्रीयताम् । नमो नमः ।

अर्थात्-श्री सरस्वती को नमस्कार । इस पूजन से श्रीसरस्वती देवी प्रसन्न  
हों, उन्हें बारम्बार नमस्कार ।

### तुला, मसी पूजन

सिन्दूर से तराजू आदि पर स्वस्तिक बना ले। उस पर मौली लपेटकर  
तुलाधिष्ठातृ देवता का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए।  
नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।  
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥

ध्यान के बाद ॐ तुलाधिष्ठातृ देवतायै नमः इस नाम मंत्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करे ।

### दीप - मालिका पूजन

भगवान् गणेश एवं भगवती लक्ष्मी की नवीन मूर्ति की पूजा, कलम-दावात की पूजा, बही-खाते की पूजा और तिजोरी-बक्से की पूजा करने के बाद पारिवारिक परम्परा के अनुसार पूज्य पितरों तथा कुल-देवता, ग्राम-नगर-देवताओं के बीच में सरसो के तेल का एक बड़ा दीपक और उसके चारों ओर ग्यारह-इक्कीस-इक्यावन अथवा अधिक छोटे दीपक, एक परात (बड़ी थाली) में रखकर सजा ले । तब 'दीप-देव' का ध्यान करे -

भो दीप! ब्रह्म - रूपस्त्वं ह्यन्धकार - विनाशकः ।

गृहाण मया कृतां पूजां, ओजस्तेजः प्रवर्धय ॥

ॐ दीप - वृक्षाय नमः ।

अर्थात् - दीप-वृक्ष को नमस्कार है ।

### महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मइया जय लक्ष्मी माता,  
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता,  
सुर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता,  
जो कोई तुमको ध्याता, रिधी सिधि धन पाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता,  
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...

जिस घर में तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता,  
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता,  
खान पान का वैभव, सब तुम से आता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...  
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता,  
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी ...  
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता,  
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता । ॐ जय लक्ष्मी ...  
इसके बाद निम्न मन्त्रों द्वारा प्रार्थना कर दीप-मालिका को नमस्कार करे

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुख - सम्पदम् ।

मम बुद्धि - प्रकाशं च दीप - ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पष्टि - वर्धनम् ।

आत्म तत्व प्रबोधाय दीप-ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

दीपावलिर्मया दत्त ग्रहाण त्वं सुरेश्वरी ।

अनेन दीप-दानेन ज्ञान-दृष्टि-प्रदा भव ॥

**विसर्जन :-** उपर्युक्त प्रकार पूजा करने के बाद, पूजा नें उपस्थित, सभी बालक-पुरुष-महिलाएँ अपने हाथों में पुष्प लेकर भगवान गणेश, महा-लक्ष्मी, महा-काली, महा-सरस्वती, कुबेर की जय-जयकार बोलें तथा छोटे-बड़े के क्रम से उनके सम्मुख पुष्प अर्पित करते हुए दण्ड-वत् प्रणाम करें। दण्ड-वत् प्रणाम करने के बाद पूजा करनेवाला दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर विसर्जन हेतु निम्न मन्त्र पढ़े -

यान्तु देव-गणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् ।

इष्ट- काम- समृद्ध्यर्थ, पुनरागमनाय च ॥



**विशेष :-** पूजा के निमित्त प्रज्वलित दीपक रात्रि भर जलता रहे, इसकी व्यवस्था करनी चाहिए।

पूजा-स्थान में ही बैठकर रात्रि-पर्यन्त श्री-सुक्त , लक्ष्मी-सुक्त , पद्मावति स्तोत्र, लक्ष्मी जी की अन्य स्तुतियों का पाठ करे ।

दीक्षा-प्राप्त व्यक्ति अपने इष्ट-मन्त्र अथवा अन्य अभीष्ट मन्त्र का जप कर सकते हैं।

मंत्र :-

**॥ॐ श्रीं हीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी लक्ष्मी मम दारिद्र्य नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देही देही क्लीं हीं श्रीं ॐ ॥**

पाँच (5) माला जप करे।

**क्षमा प्रार्थना :-** आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।  
पूजा कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ॥  
मन्त्र हीनं क्रिया हीनं, भक्ति हीनं सुरेश्वरि ।  
मया यत्-पूजितं देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥

अनेन यथा-मिलितोपचार-द्रव्यै कृत-पूजनेन श्री लक्ष्मी - देवी प्रीयतां।

॥श्री लक्ष्मी - देव्यै अर्पणमस्तु ॥

व्यापारी वर्ग के लिए बही खाता खरीदिने का समय :-  
23-10-2022, रविवार सुबह 09:12 से 09:12 तक।  
दो पहर 01:12 से 03:30 तक।

व्यापार आरंभ मुहूर्त :-  
26-10-2022, बुधवार सुबह 05:15 से 06:00 तक।  
सुबह 09:30 से 11:30 तक।



॥ ॐ ॥ श्रीं गुरुचरण कर्मलक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ ॥

**ముందుమాట**

**దీపావళి సాధనలు 2022**

ప్రియమైన సాధకులు మరియు సోదర సోదరీమణులకు....

దీపావళి శుభాకాంక్షలు మరియు ధన, ఐశ్వర్యము సమృద్ధితో

సాధనాత్మక ఆశీస్సులు ....

పరమపూజ్య సద్గురు దేవులు స్వామి శ్రీ నిఖిలేశ్వరానందజీ కృపతో సాధన

పరంపరలో ముందుకు వెళుతూ సాధకులకు తాంత్రిక దీపావళి పండుగ

జరుపుకుంటూ పూజ్యనీయ గురువుగారి కథనం అనుసరంగా హెలాల్ రాత్రి,

శివరాత్రి, కృష్ణ జన్మాష్టమి మరియు దీపావళి రాత్రి తాంత్రిక సాధనలో సిద్ధి

రాత్రిగా చెప్పబడినది.

కావున నేను మీకు ధనత్రయోదశి నుండి యమద్వితీయ వరకు 5 రోజుల

సాధనల వివరములు ఇవ్వటము జరుగుతుంది. సాధనలు చేసి గురుకృప మరియు

సాధనా మార్గంలో సాఫల్యతను, అనుభవాలను పొందుతూ ఉన్నతిని పొందినచో

నా ఈ ప్రయత్నము సాఫల్యమైనది అని ఆనందిస్తాను.

భవదీయులు

డా॥ అనిల్ కుమార్ జోషి



**శాస్త్రోక్త మహాలక్ష్మీ పూజ**

లక్ష్మీపూజ చేయు రోజు స్నానాది నిత్య కర్మలు పూర్తి చేసుకుని, తూర్పు లేదా ఉత్తర దిశ వైపు ముఖము చేసి కూర్చుని, పంచపాత్రలోని నీళ్ళు ఆచమని ద్వారా కుడిచేతిలో పోసుకుని క్రింది మంత్రము చదువుతూ ఆ నీళ్ళు తమపైన చల్లకొవాలి.

**ఓం అపవిత్ర పవిత్రో వా సర్వావస్థాం గతో పి వా**

**యః స్మరేత్ పుండరీకాక్షం స బాహ్యభ్యంతరః శుచిః॥**

మళ్లీ నీళ్ళు తీసుకుని మూడు మార్లు ఆచమనము చేయాలి.

1. ఓం ఆత్మ తత్వం శోధయామి స్వాహా॥ 2. ఓం విద్యా తత్వం శోధయామి స్వాహా, 3.

ఓం శివ తత్వం శోధయామి స్వాహా॥

**సంకల్పము :-** కుడిచేతిలో నీళ్ళు, అక్షింతలు, పుష్పాలు తీసుకుని పూజ యొక్క సంకల్పము చదవాలి.

ఓం తత్సత్ అద్వైతస్య బ్రహ్మణోహి ద్వితీయ-ప్రహారాదే శ్వేత వరాహ కల్పే-జంబూ-ద్వీపే భరత ఖండే- అముక-ప్రదేశే, అముక పుణ్యక్షేత్రే, కలియుగే, కలి ప్రథమ చరణే, అముక-సంవత్సరే, కార్తీక మాసే- కృష్ణ పక్షే, అమావాస్య తిథౌ-అముక వాసరే- అముక గోత్రోత్పన్నో - అముక నామ-శర్మాణాం-సపత్నీకస్య - సపుత్రస్య సబాంధవస్య సర్వత్ర యశో-విజయాది-లాభార్థం సర్వారిష్ట-నివృత్తి పూర్వకం సకల మనోకామనా సిద్ధ్యర్థం అప్రాప్య లక్ష్మీ-ప్రాప్యర్థ, ప్రాప్త-లక్ష్మీ చిరకాల సంరక్షణార్థం ప్రచలిత-వ్యాపార ప్రతిష్ఠానే బహు-ధన-లాభార్థం శ్రీ మహాలక్ష్మీ-ప్రసన్నార్థం (కొత్త భాతా పూజ ఐతే అముక-నామకస్య మమ వ్యాపార-ప్రతిష్ఠానభ్య నూతన-వాసనా-పూజ కర్మణః సాంగతా-సిద్ధ్యర్థం అని కలిపి చదవాలి.) స్వస్తి-వాచన-కలశ స్థాపన పూర్వకం యథా-సంపాదిత-సామగ్రయా గణపతి-సూర్యాది-నవగ్రహ-షోడష-మాతృకాది పూజన సహితం దీపావల్యాం శ్రీ గణేశ లక్ష్మీం-ప్రతిమా పూజనమ్ కరిష్యే అని నీళ్ళు రాగి పాత్రలో విడిచి పెట్టాలి.

**శాంతి పాఠం (స్వస్తి వచనము) :-**

- ఓం ఆ నో భద్రాః క్రతవో యంతు విశ్వతో దబ్ధా సో అపరీతాస్ ఉద్బిదః॥
- దేవా నో యథా సదామిద్వధే అసన్నప్రాయువో రక్షితారో దివే దివే॥ 1॥
- ఓం దేవానాం భద్రా సుమతి ఋజూయతాం దేవానా యం రాతిరభి నో నివర్తతాం॥
- దేవానా గుం సఖ్యముపసేదిమా బయం దేవా న ఆయః ప్రతిరంతు జోవసే॥ 2॥

- ఓం తాన్ పూర్వయా నివిదా హూమ్ హే వయం భగం మిత్రమదీ తిందక్షమస్త్రిధమ్॥
- అర్యమణం వరుణ గుం సోమమశ్వినా సరస్వతీ నః సుభగామయస్కరత్॥ 3॥
- ఓం తన్నో వాతో మయో భువాతు భేషజం తన్మాతా పృథ్వీ తత్పితా ధౌః॥
- తద్ గ్రావాణః సోమ-సుతో మయో భువస్తదశ్వినా శృణుత్వంధిష్ణాయువమ్॥ 4॥
- ఓం తమీశానాం జగతః తస్యృషస్పతిం ధియంజన్వమవసే హూమ్ హేవయమ్॥
- పూషా నో యథా వేదసామసద్ వృధే రక్షితా పాయురదబ్ధః స్వస్తయే॥ 5॥
- ఓం స్వస్తి న ఇంద్రో వృద్ధశ్రవాః స్వస్తి నః పూషా విశ్వ-వేదాః॥
- స్వస్తి నస్తాక్షోర్విష్ణవేమిః స్వస్తి నో బృహస్పతిర్దధాతు॥ 6॥
- ఓం పృషదశ్వా మరుతః పృశ్నిమాతరః శుభం యావానో విదధేషు జగ్గుయః॥
- అగ్ని జిహ్వో మనవః సూర-చక్షసో విశ్వే నో దేవవసా గమన్నిహా॥ 7॥
- ఓం భద్రం కర్ణభిః శృణయామ దేవా భద్రం పశ్యేమాక్ష భిర్యజత్రాః॥
- స్థిరైరంగైస్తుష్టువ గుం సస్తనూభిర్యశేమహి దేవ-హితం యదాయుః॥ 8॥
- ఓం శతమిన్ను శరదోంతి దేవా యత్రా నశ్చక్రాజరసం తనూనాం॥
- పుత్రాసో యత్ర పితరో భవంతి మానో మధ్యా రోరిషతాయుర్గంతో॥ 9॥
- ఓం అదితిధ్యౌరదితిరంతరిక్ష మదితిః॥ మాతా స పితా స పుత్రః॥
- విశ్వేదేవా అదితిః పంచజనాః అదితిర్జాతమదితిర్జనిత్వమ్॥ 10॥
- ఓం ధౌః శాంతిరంతరిక్ష గుం శాంతిః పృథ్వీ శాంతిరాపః శాంతిరోషధయః శాంతిః॥
- వనస్పతయః శాంతిర్విశ్వేదేవాః శాంతిర్బ్రహ్మ శాంతిః సర్వ గుం శాంతిః॥ వనస్పతయః శాంతిం సా మా శాంతిరేధి॥ 11॥

**లక్ష్మీ పూజ ముహూర్తములు :-**  
 24-10-2022 సోమవారము  
 మధ్యాహ్నం :- 3:00 నుండి సాయంత్రం 6:00 ల వరకు  
 సాయంత్రం :- 6:00 నుండి రాత్రి 10:30 వరకు  
 రాత్రి :- 10:30 నుండి 12:30 వరకు.

**మంగళ పాఠం :-** కుడి చేతిలో పుష్పాలు మరియు అక్షింతలు తీసుకుని మనకు మంచి జరగాలని కోరుకుని చేయాలి.

సుముఖశైవక దంతశ్చ కపిలో గజకర్ణకః  
 లంబోదరశ్చ వికటో విఘ్ననాశో వినాయకః॥ 1॥  
 ధూమ్రకేతుర్గణాధ్యక్షో ఫాలఛంద్రో గజాననః  
 ద్వాదశైతాని నామాని యఃపఠేచ్ఛణ్ణయాదపి॥ 2॥  
 విద్యారంభే వివాహే చ విదేశ-గమనే తథా  
 సంగ్రామే సంకటే చైవ విఘ్నస్తస్యన జాయతే॥ 3॥  
 శుక్లాంబరధరం దేవం శశి-వర్ణం చతుర్బుజమ్  
 ప్రసన్న వదనం ధ్యాయేత్ సర్వ-విఘ్నోప శాంతయే॥ 4॥  
 సర్వ మంగళ మాంగళ్యే శివే సర్వార్థ సాధికే  
 శరణ్యే-త్ర్యంబకే గౌరీ నారాయణి! నమోస్తుతే॥ 5॥  
 సర్వదా సర్వ-కార్యేషు నాస్తి తేషామ్ మంగళమ్  
 యేషాం హృదిస్థో భగవాన్ మంగళాయతనో హరిః॥ 6॥  
 తదేవ లగ్నం సుదినం త దేవ! తారా బలం చంద్ర బలం తదేవ  
 విద్యాబలం దైవబలం తదేవ, లక్ష్మీపతేరంద్రి-యుగం స్మరామి॥ 7॥  
 లాభస్తేషాం జయస్తేషాం కుతస్తేషాం పరాజయః  
 యేషామిందీవర శ్యామో హృదయస్థో జనార్ధనః॥ 8॥  
 వినాయకం గురూం భానుం బ్రహ్మ-విష్ణు-మహేశ్వరాన్  
 సరస్వతీ ప్రణమ్యాదౌ సర్వకార్యాయ సిద్ధయే॥ 9॥  
 అభీష్ణితార్థ-సిద్ధ్యర్థం పూజితోయః సురాసురైః  
 సర్వ విఘ్నచ్ఛిదే తస్మై గణాధిపతయే నమః॥ 10॥  
 సర్వేష్వారంబ-కార్యేషు త్రయస్త్రి భువనేశ్వరా  
 దేవాః దిశంతు నః సిద్ధిం బ్రహ్మేశాన్ జనార్ధనాః॥ 11॥

**కలశ స్థాపన :-** కలశము స్థాపించవలసిన చోట భూమిని స్పర్శిస్తూ క్రింది మంత్రం చదవాలి.

ఓం భూరసి భూమిరస్యదితిరసి విశ్వధాయా విశ్వస్య భువనస్య ధర్మీ  
 పృథివీ యచ్చ పృథివీం దృం గుం హ పృథివీం మా హి గుం సేః॥

**కలశము పెట్టవలసిన చోట మట్టి మరియు యవ్వలు పెట్టి క్రింది మంత్రం చదవాలి.**

ఓం ధాన్యమసి ధినుహి దేవాన్ ప్రాణాయత్వోదానాయ త్వా వ్యానాయ త్వా  
 దీర్ఘామను ప్రసితిమాయుషే ధ్యాం దేవో వః సవితా హిరణ్య-పాణిః  
 ప్రతి గృణ్ణాత్పచ్చిద్రేణ పాణినా చక్షుసే త్వా మహీనాం పయోసి॥

**ఇప్పుడు కలశాన్ని స్థాపిస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-**

ఓం ఆ జిప్రు కలశం మహ్య త్వా విశంత్విందవః! పునరూర్ణా నివర్తస్వ సా నః  
 సహస్రం ధుక్ష్వోరు-ధారా పయస్వతీ పునర్మా విశతాద్ రయిః॥

**కలశములో నీళ్ళు పోస్తూ క్రింది మంత్రం చదవాలి :-**

ఓం వరుణస్యోత్తంభనమసి వరుణస్య స్కంభ సర్జనీభ్యో వరుణస్య  
 ఋత్ సదస్యసి వరుణస్య ఋత్ సదనమసి వరుణస్య ఋత్ సదనమాసీద్॥

**కలశము యొక్క పై భాగంలో ఎరుపు వస్త్రము లేదా దారము (మౌళి) కడుతూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-**

ఓం వసోః పవిత్రమసి శత-ధారం వసోః  
 పవిత్రమసి సహస్ర-ధారమ్  
 దేవస్త్వా సవితా పునాతు వసోః పవిత్రేణ  
 శత-ధారేణ సుప్వా కామ-ధుక్తః ॥

**కలశములో పోక వక్కలు వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-**

ఓం యాః ఫలనీర్యా అఫలా అపుష్పాయాశ్చ పుష్పాణిః  
 బృహస్పతి-ప్రసూతాస్తానో ముంచత్వ గుం హసః॥

**ఒక రూపాయి నాణెము వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-**

ఓం హిరణ్య గర్భాః సమ-వర్తతాగ్రే భూతస్యజాతః పతిరేక ఆసీత్  
 స దాధార పృథివీం ధ్యాముతేమాం కస్మై దేవాయ హవిషా విధేమ్॥

**గంధము మొదలగునవి వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-**

ఓం గంధద్వారాం దురాధర్షాం నిత్య పుష్టాం కరిషిణీం  
 ఈశ్వరీం సర్వభూతానాం తామిహోపహ్వయమ్ శ్రియమ్॥

**సవౌషధి వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-**

ఓం యా ఓషధిః పూర్వా జాతా దేవేభ్యస్త్రియుగం పురా  
 మనైవ బబ్రూణా మహ గుం శతం ధామాని సప్న చ॥



సప్తమాత్రికా వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-  
 ఓం సోనా వృధివి నో భవాన్ముక్షరా నివేశినీ  
 యచ్చా నః శర్మ స-ప్రథాః॥  
 దూర్వా వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-  
 ఓం కాండాత్ కాండాత్ ప్రరోహంతీ పరుషః పరుషస్పరి  
 ఏవానో దూర్వే ప్రతను సహస్రేణ శతేన చ॥  
 మామిడి లేదా రావి లేదా తమలపాకులు వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-  
 ఓం అశ్వధే వో నిషదనం పర్ణే వో వసతిష్కృత  
 గోభాజ్ ఇతీలాసధ యత్న నవధ పూరుషమ్॥  
 దర్భ వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి :-  
 ఓం పవిత్రేస్థో వైష్ణవ్యా సవితుర్వః ప్రసవ  
 ఉత్పనామ్యచ్ఛిద్రేణ పవిత్రేణ సూర్యస్య రశ్విభిః॥  
 తస్య తే పవిత్ర-పతే పవిత్ర-పూతస్య  
 యత్ కామః పునేతచ్ఛక్రేయమ్॥  
 బియ్యముతో నింపిన పాత్ర కలశముపై స్థాపిస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి:-  
 ఓం పూర్ణాదర్వి పరాపత సుపూర్ణా పునరాపత  
 వస్నేవ విక్రీణా వహో ఇష మూర్ఛ గుం శతక్రతో॥  
 క్రింది మంత్రము చదువుతూ అక్షింతలు విడుస్తూ, వరుణ-స్థాపన చేయాలి:-  
 ఓం మనో జూతిర్జుషతామాజ్యస్య బృహస్పతిర్యజ్ఞమిమం  
 విశ్వే-దేవా స ఇహమాదయంతామ్ ఓం ప్రతిష్ఠ॥  
 క్రింది మంత్రములతో ఆహ్వానము చేయాలి:-  
 ఓం భూర్భువః స్వః వరుణ! ఇహగచ్ఛ ఇహ తిష్ఠ మమ పూజాం గృహోణ॥  
 తర్వాత క్రింది మంత్రాలతో శ్రీ వరుణ దేవత యొక్క పాద్యాది ఉపచారాలతో క్రమములో  
 పూజ చేయాలి.  
 ఓం వరుణాయ నమః పాదయోః పాద్యం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః శిరసిః హస్తయో అర్ఘ్యం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః గంధాక్షతం సమర్పయామి

ఓం వరుణాయ నమః పుష్పం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః ధూపం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః దీపం దర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః నైవేద్యం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః ఆచమనీయం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః తాంబూలం సమర్పయామి  
 ఓం వరుణాయ నమః దక్షిణాం సమర్పయామి  
 తర్వాత క్రింది మంత్రాలతో ప్రార్థన చేయాలి.  
 ఓం సరితః సాగరాః శైల స్తీర్థాని జలదా నదాః  
 ఆయంతు మమ భక్తస్య దురిత-క్షయ-కారకాః॥ 1॥  
 కలశస్య ముఖే విష్ణు కంఠే రుద్ర సమాశ్రితః  
 మూలే తస్య స్థితో బ్రహ్మ మధ్యే మాతృ గణాస్మృతా॥ 2॥  
 కుక్షౌతు సాగరాస్సర్వే సప్తద్వీపా వసుంధరాః  
 ఋగ్వేదోదః యజుర్వేదః సామవేదో హ్యధర్వణః॥ 3॥  
 అంగైశ్చ సహితాః స్వర్వే కలశం తు సమాశ్రితాః  
 దేవ దానవ సంవాదే మధ్యమానే మహోదధౌ॥ 4॥  
 ఉత్పన్నోసి తదాకుంభ వధృతో విష్ణునా స్వయం  
 త్వతః సర్వాణి తీర్థాణి దేవాః సర్వేత్వయి స్థితాః॥ 5॥  
 త్వయి తిష్ఠంతి భూతాని త్వయి ప్రాణాః ప్రతిష్ఠితాః  
 శివః స్వయం త్వమేవాసి విష్ణుస్త్వం చ ప్రజాపతిః॥ 6॥  
 ఆదిత్యా వసవో రుద్రా విశ్వేదేవాః స పైతృకాః  
 త్వయి తిష్ఠంతి సర్వేపి యతః కామ ఫలప్రదాః॥ 7॥  
 త్వత్ ప్రసాదాదిమం కర్మ కర్తుమీహే జలోద్భవ  
 సాన్నిద్యం కురు మే దేవ! ప్రసన్నో భవ సర్వదా॥ 8॥

**భగవాన్ గణపతి పూజ**

ఒక తెల్లని, స్వచ్ఛమైన పోకకు మోలి కట్టి కలశము ముందర ఏదేని పాత్రలో స్థాపించాలి.

దానిపై గంధాక్షత పుష్పాలు సమర్పిస్తూ క్రింది మంత్రాలు చదవాలి.

ఓం గణానాం త్వా గణపతి హవామహే ప్రియాణాం త్వా ప్రియపతి గుం హవామహే

నిధీనాం త్వా నిధి-పతి గుం హవామహే వసో మమః ఆహమజాని గర్భధమా త్వమజాసి

గర్భధమ్।

తర్వాత క్రింది మంత్రాలతో ఆవాహనము మొనరించాలి.

ఓం భూర్భువః స్వః శ్రీ గణపతేః ఇహోగచ్చ, ఇహతిష్ఠ, మమ పూజాం గృహాణ్।

క్రింది మంత్రము చదువుతూ పోకకు లేలిహాని ముద్ర చూపిస్తూ ప్రాణ ప్రతిష్ఠ చేయాలి.

ఓం మనో జూతిర్ఘృతామాజ్యస్వ బృహస్పతిర్యజ్ఞమిమం తనో త్వరిష్ఠం యజ్ఞ గుం సమిమం

దధాతుః విశ్వే-దేవా స ఇహ మాదయంతామ్ ఓం ప్రతిష్ఠ

తర్వాత క్రింది మంత్రాలు చదువుతూ గణపతికి నీళ్ళు మొనరించు ఉపచారాలు చేయాలి.

ఓం గణపతయే నమః పాదయోః పాద్యం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః శిరసిః అర్ఘ్యం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః గంధాక్షతం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః పుష్పం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః ధూపం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః దీపం దర్శయామి।

ఓం గణపతయే నమః నైవేద్యం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః ఆచమనీయం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః తాంబూలం సమర్పయామి।

ఓం గణపతయే నమః దక్షిణాం సమర్పయామి।

చివర చేతులు జోడించి భగవాన్ గణపతిని ప్రార్థించాలి. అనేన పూజనేన శ్రీ గణపతిః

ప్రియతామ్।

**నవగ్రహ పూజ**

ఒక పాత్రలో పోకలు పెట్టి కలశము ముందు పెట్టి గంధాక్షత పుష్పాలు కుడిచేతిలో

తీసుకుని క్రింది మంత్రాలు చదువుతూ ఆవాహన చేయాలి.

ఓం సూర్య-చంద్ర-మంగల-బుధ-బృహస్పతి-శుక్ర-శనిశ్చ-రాహు-కేతు- నవగ్రహాభ్యో

నమఃః ఓం నవగ్రహో ఇహోగచ్చ, ఇహతిష్ఠ మమపూజాం గృహాణ్।

తర్వాత క్రింది మంత్రాలు చదువుతూ తొమ్మిది గ్రహాలకు పాద్యాది ఉపచారాలు చేయాలి.

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః పాదయోః పాద్యం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః శిరసిః అర్ఘ్యం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః గంధాక్షతం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః పుష్పం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః ధూపం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః దీపం దర్శయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః నైవేద్యం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః ఆచమనీయం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః తాంబూలం సమర్పయామి।

ఓం సూర్యాది-నవగ్రహాభ్యో నమః దక్షిణాం సమర్పయామి।

తర్వాత చేతులు జోడించి అన్ని గ్రహాలను క్రింది మంత్రముతో ప్రార్థించాలి.

బ్రహ్మ మురారిస్త్రిపురాంతకారి, భానుః శషీ భూమి-సుతోబుధశ్చ,

గురుశ్చ శుక్రః శని-రాహు-కేతవః, సర్వే గ్రహాః శాంతి-కరా భవంతు॥

**శోడష మాతృకా పూజ**

కలశము ముందు ఒక పాత్రలో మాతృకలు పెట్టి కుడి చేతిలో గంధాక్షత పుష్పాలు

తీసుకుని క్రింది మంత్రము చదువుతూ ఆహ్వానించాలి.

ఓం గౌరీ-వద్యా-శచీ-మేధా-సావిత్రి విజయా జయా-దేవసేనా-న్వదా

స్వాహా-మాతాలోకమాత-ధృతిః-పుష్టి-తుష్టి-కులదేవతా, షోడషమాతృకాభ్యో నమఃః ఓం

షోడష మాతృకాభ్యో నమఃః ఓం శోడష మాతృకాః ఇహగచ్చ ఇహతిష్ఠ మమ పూజాం గృహాణ్।

తర్వాత వరుస క్రమములో పాద్యాది ఉపచారాలతో పూజ చేయాలి.

ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః పాదయోః పాద్యం సమర్పయామి।

ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః శిరసి అర్ఘ్యం సమర్పయామి।

ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః గంధాక్షతం సమర్పయామి।

ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః పుష్పం సమర్పయామి।

ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః ధూపం ఆఘ్రూపయామి  
 ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః దీపం దర్శయామి  
 ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః నైవేద్యం సమర్పయామి  
 ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః ఆచమనీయం సమర్పయామి  
 ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః తాంబూలం సమర్పయామి  
 ఓం గౌర్యాది-శోడష-మాతృకాభ్యో నమః దక్షిణాం సమర్పయామి  
 తర్వాత చేతులు జోడించి శోడష మాతృకలను ప్రార్థించాలి.

తే సమ్మతా జన-పదేశు ధనాని తేషాం, తేషాం యశాంసి న చ సీదతి ధర్మ-వర్గః।  
 ధన్యాస్త ఏవం నిభృతాత్మాజ-భృత్య-ద్వారా, యేషాం సదాభ్యుదయదా భవతి ప్రసన్నా॥

**శ్రీ గురు ధ్యానం**

ద్విదల కమలమధ్యే బద్ధసంవిత్ సముద్రం,  
 ధృతశివమయగాత్రం సాదకానుగ్రహోర్థమ్।  
 శృతిశిరసివిభాతం బోదమార్తాండమూర్తి,  
 శమతీతి మరశోకం శ్రీ గురు భావయామి ॥  
 హృదంభుజే కర్ణికా మధ్య సంస్తా సింహసే సంస్థిత దివ్యమూర్తిమ్ ।  
 ధ్యాయేద్గురు చంద్రశిలా ప్రకాశం,  
 చిత్పస్తకాభీష్ట వరం దదానమ్॥

శ్రీ గురుపాదుకాభ్యో నమః ధ్యానం సమర్పయామి। ఓం స్వరూపనిరూపణ హేతవే  
 శ్రీ గురవే నమః, ఓం స్వచ్ఛప్రకాశవిమర్శ హేతవే శ్రీ పరమ గురవే నమః, ఓం స్వాత్మారామ  
 పంజరవిలీనతేజసే శ్రీ పరమేష్ఠి గురవే నమః, ఆవాహయామి, పూజయామి॥

గురువుగారికి గంధములు, అక్షతలు, చందనం మొ॥వి సమర్పించి, రెండు చేతులు  
 జోడించి, ప్రార్థన చేయాలి.

అఖండ మండలాకారం వ్యాప్తం యేన చరాచరమ్,  
 తత్పదం దర్శితం యేన తస్మై శ్రీ గురవేనమః॥  
 అజ్ఞాన తిమిరాంధస్య జ్ఞానాంజన శలాకయం,  
 చక్షురుస్మీలితం యేన తస్మై శ్రీ గురవేనమః॥  
 గురుబ్రహ్మ గురుర్విష్ణు గురుర్దేవో మహేశ్వరః,  
 గురుః సాక్షాత్పరబ్రహ్మ తస్మై శ్రీ గురవే నమః ॥

**శ్రీ లక్ష్మీదేవి చిత్రము యొక్క పూజ**

గురు పూజనం తర్వాత సాధకుడు మహాలక్ష్మి పూజ ప్రారంభించాలి. మొట్టమొదటగా  
 రెండు చేతులు జోడించి, ధ్యానం చేయాలి. దానికి ముందు అగరుబత్తి వెలిగించాలి. నూనె  
 మరియు నేతి దీపం వెలిగించి, శుద్ధమైన మనస్సుతో పూర్ణ నిష్ఠతో భగవతి మహాలక్ష్మిని  
 ఆవాహన చేయాలి.

**ధ్యానము :-**

యా సా పద్మాసనస్థా విపుల-కటి-తలీ పద్మ-పత్రాయతాక్షీ  
 గంభీరార్తవ-నాభిః స్తన-భర-సమితా శుభ్ర-వస్త్రోత్తరీయా  
 యా లక్ష్మిర్దివ్య-రూపైర్మణి-గణ-ఖచితైః స్వాపితా హేమకుంభైః  
 సా నిత్యం పద్మహస్తా మమ వసతు గృహే సర్వ మాంగళ్య యుక్తమ్॥

**ఆవాహనము :-** ఆవాహన ముద్ర చూపించి ఆహ్వానించాలి.  
 ఆగచ్ఛ దేవ-దేవేశి, తేజోమయి మహాలక్ష్మి!  
 క్రియమాణాం మయా పూజాం గృహాణ్ సుర-వందితే॥  
 లక్ష్మి దేవీం ఆవాహయామి.

**పుష్పాంజలి :-** క్రింది మంత్రము చదువుతూ అమ్మవారికి పుష్పాలు సమర్పించాలి.  
 నానా-రత్న-సమాయుక్తం కార్త-స్పర-విభూషితమ్।  
 ఆసనం-దేవ-దేవేశి ప్రీత్యర్థం ప్రతి గృహ్యతామ్॥  
 శ్రీ లక్ష్మి దేవ్యై ఆసనార్థే పంచ-పుష్పాణి సమర్పయామి.

**స్వాగతమ్ :-** “శ్రీ లక్ష్మి దేవీ స్వాగతమ్” అని చెబుతూ స్వాగతించాలి.

**పాద్యం :-** క్రింది మంత్రము చదువుతూ పాద్యం సమర్పించాలి.  
 పాద్యం గృహాణ్ దేవేశి, సర్వ-క్షేమ-సమర్థే, భోః  
 భక్తయా సమర్పితం దేవి మహాలక్ష్మి నమోస్తుతే॥

**అర్ఘ్యం :-** క్రింది మంత్రము చదువుతూ అర్ఘ్యం సమర్పించాలి.  
 నమస్తే దేవ-దేవేశి నమస్తే కమలధారిణి  
 నమస్తే శ్రీ మహాలక్ష్మి ధనదా దేవి అర్ఘ్యం గృహాణ్॥



**గంధం సమర్పణ :-**

శ్రీ ఖండం-చందనం దివ్యం గంధాఢ్యం సుమనోహరమ్।  
విలేపనం మహాలక్ష్మీ చందనం ప్రతిగృహ్యతామ్।  
శ్రీ లక్ష్మీదేవ్యై చందనం సమర్పయామి.

**పుష్ప సమర్పణ :-**

యథా-ప్రాప్త-ఋతు-పుష్పైః బిల్వ-తులసీ-దలైశ్చ।  
పూజయామి మహాలక్ష్మీ ప్రసీద మే సురేశ్వరి॥  
శ్రీ లక్ష్మీదేవ్యై పుష్పం పూజయామి.

**అంగపూజ :-** క్రింది మంత్రములు ఉచ్చరిస్తూ భగవతి లక్ష్మీదేవి అంగపూజ చేయాలి. కుడిచేతిలో అక్షింతలు, పుష్పాలు మరియు చందనము తీసుకుని ప్రతి మంత్రము చదువుతూ లక్ష్మీ అమ్మవారి విగ్రహము ముందు వేయాలి.

- ఓం చపలాయై నమః పాదౌ పూజయామి।
- ఓం చంచలాయై నమః జానుసీ పూజయామి।
- ఓం కమలాయై నమః కఠిం పూజయామి।
- ఓం కాత్యాయిన్యై నమః నాభిం పూజయామి।
- ఓం జగన్మాత్రే నమః జఠరం పూజయామి।
- ఓం విశ్వవల్లభాయై నమః వక్షస్థలం పూజయామి।
- ఓం కమలవాసిన్యై నమః హస్తౌ పూజయామి।
- ఓం కమల పత్రాక్షై నమః నేత్రత్రయం పూజయామి।
- ఓం శ్రియై నమః శిరః పూజయామి।

**అష్ట-లక్ష్మీ పూజ**

భగవతీ లక్ష్మీ అమ్మవారి వద్ద అష్టలక్ష్మీ పూజ చేయాలి.  
ఓం అణిమ్నే నమఃః ఓం మహిమ్నే నమఃః ఓం గరిమ్నే నమఃః ఓం లఘిమ్నే నమఃః  
ఓం ప్రాపై నమఃః ఓం ప్రాకాన్యై నమఃః ఓం ఈశితాయై నమఃః ఓం వశితాయై నమఃః



**మహాలక్ష్మీ హారతి**

- ఓం జయలక్ష్మీ మాతా మైయా జయ లక్ష్మీ మాతా,  
తుమ్కో నిశిదన్ సేవత హర విష్ణు ధాతా । ఓం జయ లక్ష్మీ... || 1||
- ఉమా, రమా, బ్రహ్మాణీ తుమ్ హీ జగ మాతా,  
సూర్య చంద్రమా ధ్యవత్ నారద ఋషి గాతా । ఓం జయ లక్ష్మీ ... || 2||
- దుర్గా రూప నిరంజని సుఖ సంపతి దాతా,  
కర్మ ప్రభావ ప్రకాశిని భవ నిధి కీ త్రాతా । ఓం జయ లక్ష్మీ ... || 3||
- తుమ్ పాతాల నివాసిని తుమ్ హీ శుభ దాతా,  
కర్మ ప్రభావ ప్రకాశిని భవ నిధి కీ త్రాతా। ఓం జయ లక్ష్మీ ... || 4||
- జిస్ ఫుర్ మే తుమ్ రహతీ తహం సబ్ సద్గుణ్ ఆతా,  
సబ్ సంభవ హౌ జాతా మన్ నహి ఫుబ్ రాతా । ఓం జయ లక్ష్మీ ... || 5||
- శుభ గుణ మందిర సుందర శ్రీరో దధి జాతా,  
రత్న చతుర్దశ తుమ్ బిన్ కోఈ నహిం పాతా । ఓం జయ లక్ష్మీ... || 6||
- మహాలక్ష్మీ జీ కీ ఆరతీ జో కోఈ నర గాతా,  
ఉర్ ఆనంద్ సమాతా పాప ఉతర్ జాతా । ఓం జయ లక్ష్మీ ... || 7||

**జల హారతి :-** ఓం ధ్యౌః శాంతిరంతరిక్ష (గూం) శాంతిః పృథ్వి శాంతిరాపః శాంతి రోషధయః  
శాంతిః వనస్పతయః శాంతి ర్విశ్వేదేవాః శాంతిః బ్రహ్మ శాంతిః సర్వ (గూం) శాంతిః  
శాంతిరేవ శాంతిః సా మా శాంతి రేధి।

**ప్రదక్షిణ :-**

యాని కాని చ పాపాని, జన్మాంతర కృతాని చ।  
తాని తాని వినశ్యంతి, ప్రదక్షిణ పదే పదే॥  
అన్యథా శరణం నాస్తి, త్వమేవ శరణం దేవి।  
తస్మాత్ కారుణ్య భావేన, క్షమస్య పరమేశ్వరి॥  
శ్రీ లక్ష్మీ-దేవ్యై ప్రదక్షిణం సమర్పయామి.





**వందనా సహిత పుష్పాంజలి :-**

కర-కృతం వా కాయజం కర్మజం వా  
శ్రవణ-నయనజం వా మానసం వాపరాధమ్।  
విదితమవిదితం వా, సర్వమేతత్ క్షమస్య  
జయ జయ కరుణాభ్యే శ్రీ మహాలక్ష్మీ త్రాహి।  
శ్రీ లక్ష్మీ దేవ్యై మంత్ర పుష్పాంజలిం సమర్పయామి.

**సాష్టాంగ ప్రణామము :-** క్రింది మంత్రము చదువుతూ సాష్టాంగ ప్రణామము చేయాలి.

ఓం భవాని త్వం మహాలక్ష్మీః సర్వ-కామ-ప్రదాయినీ।  
ప్రసన్నా సుంతుష్టా భవదేవి నమోస్తుతే।  
అనేన పూజనేన శ్రీ లక్ష్మీదేవీ ప్రీయతామ్ నమో నమః।

**క్షమా ప్రార్థన :-**

ఆవాహనం నా జానామి న జానామి విసర్జనమ్।  
పూజాకర్మ న జానామి క్షమస్య పరమేశ్వరి।  
మంత్రహీనం క్రియాహీనం భక్తి-హీనం సురేశ్వరిః।  
మయా యత్ పూజితం దేవీ పరిపూర్ణం తదస్తు మే।

అనేన యథా-మిలితోపచార-ద్రవ్యైః కృత-పూజనేన శ్రీ లక్ష్మీదేవీ ప్రీయతామ్

**కలము-పుస్తకము పై మహాకాళీ పూజ**

కలము-పుస్తకమును పూజా స్థానములో ఉంచి ఉంగరము తొడుగు వేలితో (చిటికెన వేలు ప్రక్క వేలు) ఎర్ర చందనముతో స్వాస్థికము వ్రాయాలి. అక్కడే భగవతీ శ్రీ కాళీ మాత పూజ చేయాలి.

**ధ్యానము :-**

సద్యశ్చిన్నః శిరః కృపాణమభయం హస్తైర్వరం భిబ్రతీతం।  
ఘోరాస్యాం శిరసాం స్రజం సురుచిరామున్నుక్త కేశావలీమ్।  
సుక్యాస్పృక్-ప్రవహోం శృషాన-నిలయాం శృత్యోః శవాలంకృతిం।  
శ్యామాంగీకృత-మేఖలాం శవ-కరైర్దేవీం భజే కాళికామ్।

**ఆవాహనము :-** ఆహ్వాన ముద్ర చూపించి క్రింది మంత్రము చదువుతూ అమ్మవారిని

ఆహ్వానించాలి.



ఓం దేవేశీ భక్త-సులభే పరివార-సమన్వితే  
యావత్ త్వాం పూజ ఇశ్యామి తావత్ త్వం సుస్థిరా భవ।  
దుష్పారే ఘోర-సంసార-సాగరే పతితం సదా।  
త్రాయస్వ వరదే, దేవి నమస్తే చిత్-పరాత్మికే।  
యే దేవా, యాశ్వ దేవశ్వ, చలితాయాం చలంతి హి।  
ఆవాహయామి తాన్ సర్వాన్ కాళికే పరమేశ్వరి।  
ప్రాణాన్ రక్ష, యశోరక్ష, రక్షదారాన్, సుతాన్ ధనమ్।  
సర్వరక్ష-కరీ యస్మాత్ త్వం హి దేవి, జగన్మయే।  
ప్రవిశ్య తిష్ఠ యజ్ఞేస్మిన్ యావత్ పూజాం కరోమ్యహమ్।  
సర్వానంద-కరే, దేవి సర్వ సిద్ధిం ప్రయచ్ఛ మే।  
తిష్ఠాత్ర కాళికే, మాతః సర్వ-కళ్యాణ హేతవే।  
పూజా గ్రహాణ్ సుముఖి నమస్తే .....।

**పుష్పాంజలి యుక్త పూజ :-** పుష్పాలు తీసుకుని క్రింది మంత్రము చదువుతూ అమ్మవారి ముందు వేయాలి.

నానా రత్న సమాయుక్తం కార్త-స్వర విభూషితమ్।  
ఆసనం దేవ-దేవేశీ ప్రీత్యర్థం ప్రతి గృహ్యతామ్।  
శ్రీ మహాకాళీ దేవ్యై ఆసనార్థే పంచ పుష్పాణి సమర్పయామి.

కొన్ని అక్షింతలు, పుష్పాలు, గంధం తీసుకుని పెన్ను, పుస్తకముపై వేస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి.

ఓం మహాకాళ్యై నమః అనేన పూజనేన శ్రీకాళీ దేవీ ప్రీయతామ్ నమో నమః।

**కలము-పుస్తకము పై సరస్వతీ పూజ**

కాళీ అమ్మవారి పూజ తర్వాత సరస్వతీ అమ్మవారి పూజ చేయాలి.

**ధ్యానము :-**

యా కుందేందు-తుషార-హర-ధవళా, యా శుభ్ర వస్త్ర వృతా।  
యా వీణా-వర-దండ-మండిత-కరా, యా శ్వేష పద్మాసనా।  
యా బ్రహ్మీచ్యుత-శంకర-ప్రభృతిర్దేవైః సదా వందితా।  
సా మాం పాతు సరస్వతీ భగవతీ నిఃశ్చేష జాడ్యాపహా।





**అవాహనము :-**

ఆగచ్ఛ దేవ-దేవేశి, తేజోమయి సరస్వతి

క్రియమాణాం మయా పూజాం గృహాణ్ సురవందితే।

**పుష్పాంజలి పూర్వక పూజ :-** ఆసనము గురించి 5 పుష్పాలు సమర్పిస్తూ క్రింది మంత్రము చదవాలి.

నానా రత్న- సమాయుక్తం, కార్త-స్వర-విభూషితమ్।

ఆసనం దేవ-దేవేశి, ప్రీత్యర్థం ప్రతి గృహ్యతామ్।

శ్రీ సరస్వతీ-దేవ్యై ఆసనార్థే పంచ-పుష్పాణి సమర్పయామి.

ఓం శ్రీ సరస్వత్యై నమః। అనేన పూజనేన శ్రీ సరస్వతీ దేవీ ప్రీయతామ్ నమో నమః

**దబ్బులపెట్టె (గల్లాపెట్టె) పై శ్రీ కుబేర పూజ**

సింధూరముతో గల్లా పెట్టెపై స్వాస్తిక చిహ్నము వేసి దానిపై మౌళి కట్టి శ్రీ కుబేర పూజ చేయాలి.

**ధ్యానము :-**

మనుజ-బాహ్య-విమాన-స్థితమ్। గరుడ-రత్న-నిభం నిధి-నాయకమ్॥

శివ-సఖం ముకుటాది - విభూషితమ్। వర-గదే దధతం భజే తుందిలమ్॥

**అవాహనము :-** ఆహ్వాన ముద్ర చూపిస్తూ క్రింది మంత్రము ద్వారా ఆహ్వానించాలి.

అవాహయామి దేవ, త్వామిహాయాహి కృపాం కురు।

కోశం వర్షయ నిత్యాం త్వం పరి రక్ష సురేశ్వర॥

శ్రీ కుబేర దేవం అవాహయామి.

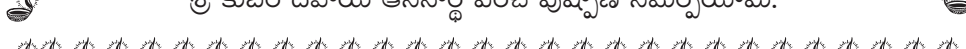
**పుష్పాంజలి పూర్వక పూజ :-** శ్రీ కుబేరునికి 5 పుష్పాలు తీసుకుని ఆసనము లాగా సమర్పిస్తూ

క్రింది మంత్రము పఠించాలి.

నానా-రత్న-సమాయుక్తం కార్త-స్వర-విభూషితమ్।

ఆసనం-దేవ-దేవేశ, ప్రీత్యర్థం ప్రతి గృహ్యతామ్।

శ్రీ కుబేర దేవాయ ఆసనార్థే పంచ పుష్పాణి సమర్పయామి.



**తులా మసి పూజ**

సింధూరముతో తరాజు వాటిపై స్వాస్తికము వేయాలి. దానిపై మౌళి కట్టి తులాధిష్ఠ్యాత్రి

దేవత ధ్యానము చేయాలి.

నమస్తే సర్వదేవానాం శక్తి తత్వే సత్యమాశ్రితా

సాక్షిభూతా జగద్ధాత్రి నిర్మితా విశ్వయోనినా

ఓం తులాధిష్ఠాత్రు దేవతాయై నమః॥

ఈ మంత్రముతో గంధాక్షత పుష్పాల వంటి ఉపచారాలతో పూజ చేసి నమస్కరించాలి.

**దీప మాలికా పూజ**

పై పూజలు అన్ని ఐన తర్వాత పరివారిక పరంపర అనుసారము పితల మరియు కులదేవత, గ్రామ, నగర దేవతల మధ్యన ఆవాల నూనెతో ఒక పెద్ద దీపము దానికి నాలుగు వైపులా 11,21,51, లేదా ఇంకా ఎక్కువ దీపాలు ఒక పెద్ద పళ్ళెములో పెట్టి క్రింది ధ్యానము చేయాలి.

భో దీప! బ్రహ్మ స్వరూపం హ్యాంధకార-వినాశకః।

గృహాణ్ మయాకృతాం పుజాం ఓజస్తేజః ప్రవర్ధయ॥

ఓం దీప వృక్షాయ నమః.

క్రింది మంత్రము చదువుతూ దీపములకు నమస్కరించాలి.

శుభం కరోతు కళ్యాణమారోగ్యం సుఖ సంపదమ్।

మన-బుద్ధి-ప్రకాశం చ దీపం - జ్యోతిర్నమోస్తుతే॥

శుభం భవతు కళ్యాణమారోగ్యం పుష్టిం వర్ధనమ్।

దీపాలిర్మయ దత్తా గృహాణ త్వం సురేశ్వరి।

అనేన దీప దానేన జ్ఞాన-దృష్టి ప్రదాభవ॥

**విసర్జనము :-** పూజ చేసినవారు కుడి చేతిలో అక్షింతలు, పూలు తీసుకుని క్రింది మంత్రము

చదివి విసర్జించాలి.

యాంతు దేవ గణాః సర్వే పాజామాదాయ మామకీమ్।

ఇష్ట-కామ సమృద్ధయర్థం పునరాగమనాయ చ॥



రాత్రి మొత్తం దీపాలు వెలిగేలా చూసుకోవాలి. రాత్రి శ్రీ సూక్తము, లక్ష్మీ సూక్తము చదవగలిగితే చాలా శ్రేష్ఠము.

మంత్రం :-

॥ ఓం శ్రీం హ్రీం క్లీం త్రిభువన పాలినీ లక్ష్మీ మమ దారిద్ర్య  
నాశయ నాశయ ప్రచురం ధనం మే దేహి దేహి క్లీం హ్రీం శ్రీం ఓం॥  
5 మాలల జపం చేయాలి.

క్షమా ప్రార్థన :- ఆవాహనం న జానామి, న జానామి వినర్జనమ్ ।

పూజా కర్మ న జానామి, క్షమస్వ పరమేశ్వరీ ॥

మంత్ర హీనం క్రియా హీనం, భక్తి హీనం సురేశ్వరి

మయా యత్-పూజితం దేవి పరిపూర్ణం తదస్తు మే ॥

॥ అనేన యథా మిలితోపచార ద్రవ్యై కృత పూజనేన శ్రీ లక్ష్మీ దేవీ ప్రీయతాం ॥

॥ శ్రీ లక్ష్మీ దేవ్యై అర్పణమస్తు ॥

**వ్యాపారస్తులు ఖాతా పుస్తకములు కొనుటకు శుభసమయములు :-**

23-10-2022 ఆదివారం :

ఉదయం 9:12ని॥ల నుండి 10:30 ని॥ల వరకు.

మధ్యాహ్నం 1:12 ని॥ల నుండి 3:30 ని॥ల వరకు.

**వ్యాపార ఆరంభ ముహూర్తములు :-**

26-10-2022 బుధవారం:

ఉదయం 5:15 నుండి 6:00 ల వరకు

ఉదయం 9:30 నుండి ఉదయం 11:00ల వరకు.

సూచన:- దీపావళి పూజా సాధన సామగ్రి ప్యాకెట్లో ప్రాణ ప్రతిష్ఠ

చేసిన విశేషమైన లక్ష్మీ యంత్రం, లక్ష్మీ వరద మాల, 2 గ్రా.వెండి

నాణెము మరియు 48 రకముల వస్తువులు, మరియు పూజా సామగ్రి,

పూజావిధానము ఉన్నాయి. దీని విలువ రూ.900/- మరియు అదనపు

పోస్టల్ చార్జీలు రుసుము చెల్లించవలెను. మీరు ఎస్ఎమ్ఎస్ ద్వారా

గాని లేదా వాట్సప్ ద్వారా గాని సమాచారం పంపినచో, మీ యొక్క

అడ్రసుకు స్పీడ్ పోస్ట్ లేదా కొరియర్ ద్వారా పంపడం జరుగుతుంది.

సౌజన్యంతో.....

**గురుకృపా పూజా స్టోర్స్**

# 4-8-438, రామ మందిరం వెనుక,

గౌలిగుడ, హైదరాబాద్ - 500 012 (TS)

Mb :9440782655

email-udaydattjoshi@gmail.com

భవదీయ.....

**ఉదయదత్త జోషి**

# 4-8-438, రామ మందిరం వెనుక,

గౌలిగుడ, హైదరాబాద్ - 500 012 (TS)

Mb :9440782655

email-udaydattjoshi@gmail.com



सुचना :- दीपावली पुजन सामग्री पैकेट मे प्राण प्रतिष्ठित  
विशेष लक्ष्मी यंत्र + लक्ष्मी वरवरद माला + 2 ग्राम चाँदी का  
सिक्का के साथ अडतालीस (48) प्रकार की सामग्री एवं पूजा  
विधान दिया गया है। इस दीपावली पुजन सामग्री पैकेट का  
न्यौछावर 900 रु. एवं पोस्टेज अलग से देय होगा। आपके द्वारा  
एस एम एस अथवा व्हाट्सैप मेसेज प्राप्त होते ही आपके पते पर  
यथा शिघ्र स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा भेज दिया जायेगा।

सौजन्य से

### गुरुकृपा पूजा स्टोर्स

# 4-8-438, राम मंदिर के पिछे, गौलिगुडा,

हैदराबाद - 500 012 (तेलंगाणा)

Mb :9440782655

email-udaydattjoshi@gmail.com

भवदिय

### उदयदत्त जोशी

# 4-8-438, राम मंदिर के पिछे, गौलिगुडा,

हैदराबाद - 500 012 (तेलंगाणा)

Mb : 9440782655

email-udaydattjoshi@gmail.com

